Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2024 5(2), 564–570

PUPPETRY: THE CARRIER OF TRADITIONAL FOLK MUSIC, CULTURE AND TRADITIONS

कठपुतली कला: परम्परागत लोक संगीत, संस्कृति एवं परंपरा की संवाहक

Poonam Kumari [1], Dr. Namita tyagi [2]

[1] Research Scholar, Department of Drawing and Painting
[2] Assistant Professor, Department of Drawing and Painting, Faculty of Arts, Dayalbagh Educational Institute (Deemed to be University), Dayalbagh, Agra, 282005, Uttar Pradesh

ABSTRACT

English: Indian culture is reflected in various forms of art, in which folk art playing a significant role. Among the diverse forms of folk art, puppetry is also included. Puppetry is a multifaceted and dynamic art form that has been captivating audiences for centuries. In puppetry performances, music holds as much importance as emotional expression does in painting. From ancient traditions to contemporary theater, music serves as an essential element in puppetry, narrating the story, creating the appropriate atmosphere, and providing rhythm and form to the performance. In ancient civilizations such as India, China, and Indonesia, the art of puppetry was celebrated as a form of religious influence and cultural festivity. In its evolved form, puppetry has also contributed to education and psychology. In classrooms, it has served as an effective audio-visual aid for learning, leaving a positive impact on the audience. In public awareness campaigns, the plays and stories crafted through puppetry stimulate the human mind, with the sound of music playing a special role in enhancing the experience. This research paper explores the role of music in the traditional performance of puppetry, highlighting how music integrates with puppetry to create a positive impact. It presents the coordination of music in enhancing the overall effect of the puppetry performance.

Hindi: भारतीय संस्कृति का प्रतिरूप विभिन्न कलाओं में दर्शित होता है, जिसमें लोक कला का भी महत्वपूर्ण योगदान है। लोक कला के अन्तर्गत कठपुतली कला भी शामिल है। कठपुतली कला बहुमुखी एवं गतिशील कला का रूप है, जो कि शताब्दियों से दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित करती आई है। कठपुतली प्रदर्शन में संगीत की भूमिका उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी चित्रकला में भाव व्यंजना महत्वपूर्ण है। प्राचीन परंपरा से लेकर समकालीन रंगमंच तक संगीत एक आवश्यक तत्व के रूप में कठपुतली प्रदर्शन में कहानी व्यक्त करता है, उपयुक्त वातावरण बनाता है, व खेल में लय व रूप प्रदान करता है। प्राचीन सभ्यताओं में जैसे भारत, चीन एवं इंडोनेशिया में कठपुतली की कला एक धार्मिक प्रभाव एवं सांस्कृतिक उत्सव के रूप में मनाई जाती रही है। अपनी विकसित अवस्था में कठपुतली ने शिक्षा, मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया। कक्षा में ज्ञानार्जन में एक श्रव्य, दृश्य सामग्री के रूप में सहायक रही यह दर्शकों पर एक साकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करती है। जन जागरूकता अभियानों में इनके द्वारा रचित नाटकों, कथा- कहानियों का प्रभाव मानव मस्तिष्क को क्रियाशील बनाता है, जिसमें संगीत की ध्वनियाँ अपना विशेष महत्व रखती हैं। इस शोध पत्र के अंतर्गत कठपुतली के पारम्परिक प्रदर्शन में संगीत के समन्वय की क्या भूमिका है, संगीत किस प्रकार कठपुतली में सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करता है उसके समन्वय को प्रस्तुत किया गया है।

Keywords: कठपुतली, लोक संगीत, परम्परा, प्रदर्शन, लोक कला, संस्कृति, दर्शकों सांस्कृतिक, गतिशील

Corresponding Author
Namita tyagi, natyagi09@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i2.2024.3551

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

1.1. भूमिका

मानव मस्तिष्क सदैव से रचनात्मक व क्रियाशील रहा है। वह अपनी कलाओं को विभिन्न रूपों में प्रकट करता आया है, जैसे कि संगीत के रूप में, वाद्य यंत्र बजाने के रूप में, नृत्य के रूप में, नाट्य कला तो कुछ मूर्ति व चित्रकला के रूप में प्रस्तुत करता है। इन कलाओं को विशेष रूप से दो भागों में विभाजित किया गया है। चारू शिल्प (ललित कला) तथा कारू शिल्प (उपयोगी कला)। आधुनिक विद्वानों ने ललित कलाओं के लिए मेजर आर्ट तथा उपयोगी कलाओं के लिए माइनर आर्ट शब्द का प्रयोग किया। ललित कलाओं के अंतर्गत मुख्य रूप से पांच कलाओं को शामिल किया गया है- संगीत कला, चित्रकला, काव्य कला, मूर्ति एवं स्थापत्य कला।

नृत्य, संगीत, नाटक, सर्कस व कठपुतली आदि कलाओं को रंगमंच पर प्रदर्शित किया जाता है।प्रदर्शन कला रंगमंच पर प्रदर्शित किए जाने वाले मुख्य रूप से दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किए गए प्रदर्शन को संदर्भित करता है। प्रदर्शन कला के अभिनय में गायन, जादू, मुकाभिनय तथा कठपुतली शामिल है जिसमें शारीरिक भाषा आवाज तथा चेहरे के भावों के माध्यम से एक रचनात्मक रचना का संचार किया जाता है। वास्तव में देखा जाये तो प्राचीन काल से ही कठपुतलियों के साक्ष्य प्राप्त होते हैं परंतु रंगमंच पर प्रदर्शित किए जाने के कारण इन्हें प्रदर्शन कला का प्रमुख अंग माना जाता है। कठपुतलियों का वर्णन भारतीय ग्रंथ महाकाव्य महाभारत व तमिल ग्रंथ शिल्पादिकारम आदि विभिन्न साहित्यिक कृतियों में किया गया है। पारंपरिक नाटकों की तरह कठपुतली नाट्य महाकाव्य व दंतकथाओं पर आधारित होते हैं। देश के विभिन्न स्थानों में कठपुतली की अपनी एक विशेष पहचान होती है उनमें चित्रकला, मूर्ति कला व संगीत कला की क्षेत्रीय शैली झलकती है। कठपुतली एक गतिशील तथा बहुआयामी कला है। कठपुतली की कला ने दर्शकों को शताब्दियों से मंत्रमुग्ध किया है। कठपुतली के प्रदर्शन की उन्नति तथा भावनात्मक प्रभाव में संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका अभिन्न रूप से रही है। प्राचीन परंपराओं से लेकर समकालीन रंगमंच प्रदर्शन तक कहानी को कहने व बढ़ाने, नाटक प्रदर्शन में, उपयुक्त वातावरण बनाने में, कठपुतली प्रदर्शन को लय तथा संरचना प्रदान करने में संगीत बहुत महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करता है। संगीत अपने प्रारंभिक काल से ही कठपुतली कला के साथ घनिष्ठ रूप से सम्मिलित रहा है। विविध प्रकार की कलाऐं लोक जीवन में प्रचलित रही है, जिसमें शिव तथा पार्वती के संदर्भ बहुतायात से मिलते हैं, विशेष रूप से राजस्थान के कठपुतली भाट जब कठपुतली का खेल आरंभ करते हैं तब ढोलकवाद्री स्त्री शिव की स्थिति में गीत गाती है।

बैल चढ़े शिवजी मिले पूरण हो सब काम।

खेल काठपुतली करां लेके हरि का नाम।।(भानावत, 2002)

देश के विभिन्न स्थानों व राज्यों में अपनी संस्कृति के अनुसार लोक गीत व संगीत वादन का आहवाहन किया जाता है।

2. शोध समस्या

कठपुतली में संगीत का एकीकरण मात्र एक संगीत नहीं होता अपितु अधिकांशतः प्रदर्शन की संरचना तथा अर्थ का केंद्र होता है। कठपुतली तथा संगीत के प्रदर्शन में अनेक समस्यायें उत्पन्न होती है जैसे इस कला के प्रदर्शन में संगीत दर्शकों के समक्ष प्रभाव को और अधिक उत्तेजित करता है। संगीत एवं कठपुतली कला का समन्वय एक ऐसी कठिन समस्या के रूप में सामने आता है, जिसमें कठपुतली की गतिशीलता के साथ संगीत का तादात्मय स्थापित करना, परम्परागत सांस्कृतिक संगीत का चुनाव व नवीन विचारधारा व परिवेश के अनुसार कठपुतली कला की परम्परागत विशेषताओं के साथ नये-नये संगीत को समन्वित करता है। कठपुतली संचालन में संगीत के साथ कठपुतली की गतिविधि को पारस्परिक तरीके से गति देना तथा हाथ, पैर, सिर आदि मुद्राओं को संगीत से समन्वय व तालमेल बिठाना बहुत कठिन होता है। परंतु कठपुतली संचालक इस कला को बहुत ही कुशलता पूर्वक इस गतिविधि को संगीत के साथ तालमेल बिठाकर संचालन करते हैं।(Samar, 1979) संगीत के साथ अगर कठपुतली को सही गतिविधि प्रदान न की जाये तो खेल अरुचिकर हो जाएगा। कठपुतली की कला में समर्थन और अधिक बढ़ाने के लिए संगीत का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाता है। यह समस्या कथन कठपुतली के साथ संगीत को एकीकृत करने की जटिलताओं पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है,तथा इन चुनौतियों पर से निपटने के लिए संभावित समाधान अथवा दृष्टिकोण खोजने का आधार तैयार करता है।

2.1. उद्देश्य

- संगीत विभिन्न संस्कृतियों तथा परम्पराओं में कठपुतली प्रदर्शन की कथा संरचना तथा भावनात्मक गहराई में कहानी कहने की कला को बढ़ाने में संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका का अध्ययन।
- कठपुतलियों के मंचन में गति के बीच तालमेल बिठाने के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीकी तथा कलात्मक विधियों को प्रयोग तथा समग्र प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन।
- आधुनिक कठपुतली तथा संगीत एकीकरण में पारम्परिक कठपुतली रूपों के साथ उत्पन्न अनेकानेक चुनौतियों का अध्ययन।

- प्राचीन समय में कठपुतली प्रचार व मनोरंजन का प्रमुख साधन थी परंतु आज के समय में इसका प्रचलन बहुत ही कम रह गया है। विलुप्त होती जा रही इस संस्कृति को भविष्य की पीड़ियों के लिए संरक्षित करने का उद्देश्य।
- संगीत ने विभिन्न सांस्कृतिक संगीत परम्पराओं को कठपुतली के खेल के साथ समाहित कर लिया है उसका अनोखा मिश्रित रूप नई रचनात्मक अभिव्यक्तियों का अध्ययन।

3. परिकल्पना

कठपुतली लोक संगीत, साहित्य तथा संस्कृति का महत्वपूर्ण समन्वय है,कठपुतली के मंचन में महाभारत रामायण तथा लोक कथाओं नैतिक मूल्यों का प्रदर्शन किया जाता है। प्रदर्शन के समय बीच-बीच में लोकगीतों को गाकर तथा खेल के साथ संगीत का वादन करके खेल को और मनोरंजक बनाया जाता है। कठपुतली जब संगीत के साथ जुड़ती है, तब एक प्रभावी शैक्षिक विषय उपकरण के रूप में कार्य करती है। कठपुतली का विकास संगीत से काफी प्रभावित हुआ है। संगीत शैलियों तथा वाद्य यंत्रों में परिवर्तन सीधे कठपुतली मंचन के रूप में शैली को प्रभावित करते हैं। कठपुतली युवा व बच्चों को बहुत अधिक सिखाने में मदद करती है, नैतिक मूल्यों का विकास तथा सांस्कृतिक विरासत प्रदान करती है। कठपुतली के साथ संगीत एकीकरण प्रदर्शन की भावनात्मक भावना को बढ़ाता है, जिससे दर्शकों के लिए अधिक प्रभावशाली हो जाता है। कठपुतली व संगीत को ऐतिहासिक रूप से कहानी कहने का एक अनूठा रूप बनाने के लिए आपस में जोड़ा गया जो समाजों के सांस्कृतिक मूल्यों व परंपराओं को दर्शाता है जिनमें उनका अभ्यास किया जाता है इस परिकल्पना के अध्ययन से यह अन्वेषण इस शोध पत्र में प्रस्तुत है।

4. अध्ययन की प्रासंगिकता

कठपुतली कला ने समयानुसार एक नया रूप धारण कर लिया है। वर्तमान युग में कठपुतली की कला में संगीत की भूमिका अत्यधिक प्रासंगिक है जो इस कला को बढ़ाने के लिए अनेक कार्य करती है। डिजिटल व इंटरनेट के समय में कठपुतली के प्रदर्शन व कार्यक्रम दर्शकों को दिखाने के लिए रिकॉर्ड किए जाते हैं। इस कार्यक्रम में अहम भूमिका निभाते हुए संगीत निरंतर तथा भावनात्मक जुड़ाव प्रदान करके इन प्रस्तुतियों को आगे बढ़ाने में अग्रसर करता है, जो प्रत्यक्ष आभासी दर्शकों को बांधे रखने के लिए महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त संयुक्त कठपुतली के साथ संगीत का प्रयोग शैक्षणिक तथा चिकित्सकीय संदर्भ में तीव्रता से हो रहा है।(सामर, 1979) संयुक्त कठपुतली के साथ संगीत का प्रयोग संचार में मदद करता है, बच्चों व विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के साथ कठपुतली का अनुभव सीखने अथवा चिकित्सकीय उपकरण के रूप में अधिक आकर्षक व प्रभावी हो जाता है। कठपुतलियाँ अनेकों प्रकार से मनोरंजन, सामाजिक कार्यों में जागरूकता फैलाने प्रचार आदि में अहम भूमिका अदा करती है, तथा साथ ही इसके मंचन में संगीत अपनी अभिव्यंजक शक्ति को बढ़ाकर इसकी कथा को एक ठोस आधार प्रदान करता है, तथा शैक्षिक व्यवस्था में प्रायोजकता का विस्तार कर आधुनिक कठपुतली में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आधुनिक समय में देश व विदेश में इस व्यवसाय के रूप में देखा जाने लगा है। राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संस्थान कठपुतली कला के विकास के लिए व्यक्तिगत रूप से अनुदान प्रदान करते हैं। वर्तमान समय में इसकी उपयोगिता तथा स्थिति को देखते हुए भविष्य की संभावनाओं के लिए और अधिक जागरूक हुआ जा सकता है, इसी कार्यक्रम के अंतर्गत अब विश्व कठपुतली दिवस प्रत्येक वर्ष 21 मार्च को मनाया जाने लगा है। वर्तमान समय में जहाँकठपुतली कला को डिजिटल मीडिया प्रकाश व्यवस्था ऑनलाइन प्रारूपीकरण व अन्य प्रभावों के साथ एकीकृत किया जा सकता है। इसमें संगीत एक सामंजस्य पूर्ण परिवेश बनाने में मदद करता है जिससे दर्शकों को प्रदर्शन में रुचि उत्पन्न करने की ओर अग्रसर किया जा सकता है। समकालीन कठपुतलियों में कहानी सुनाने में संगीत अमूर्त रूपों के साथ प्रयोग किया जाता है। संगीत दर्शकों को कथा के माध्यम से मार्गदर्शन करता है। संगीत, कठपुतली में सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित तथा नवाचार की सम्भावनाऐं प्रदान करने का एक विशिष्ट माध्यम है। पारम्परिक प्रदर्शन में वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है तथा आधुनिक रूपांतरों में समकालीन संगीत के साथ मिश्रित कर एक अनोखा सुंदर मिश्रण तैयार किया जा सकता है।

5. शोध प्रविधि

ऐतिहासिक रूप से भारत में कठपुतलियों के प्रमाण 2500 ईसा पूर्व सिन्धु घाटी सभ्यता व 2000 ईसा पूर्व मिस्त्र से हमें प्राप्त होते हैं। हड़प्पा व मोहनजोदड़ो के उत्खनन स्थल से एक टेराकोटा गुड़िया प्राप्त हुई है जिसका सिर धड़ से अलग किया जा सकता है तथा वह तार से छेड़छाड़ करने में सक्षम है, तथा अन्य आकृति एक बन्दर की है जिसे छड़ी से ऊपर नीचे घुमाया जा सकता है। मिस्त्र में मिट्टी तथा हाथी दांत से निर्मित तार नियंत्रित कठपुतलियों का प्रयोग मिस्त्र की कर्बों में भी किया गया है। (Banerjee, 2006)कठपुतलियों का वर्णन भारतीय ग्रंथ महाकाव्य, महाभारत, तमिल ग्रंथ शिल्पादिकारम व अनेक साहित्यिक कृतियों में प्राप्त होता है। कठपुतलियाँ विशेष रूप से चार प्रकार की होती हैं। छाया कठपुतली जिसमें कर्नाटक की तोगालू गोम्बेयाटा, आन्ध्र प्रदेश की थोलू बोम्मालाटा, ओडिशा की रावण छाया। छड़ कठपुतली में बिहार की यमपुरी, बंगाल-ओड़िशा-असम क्षेत्र की पुतुल नाच। दस्ताना कठपुतली में केरल की पावाकूथु। धागा कठपुतली में ओड़िशा की कंढेई, कर्नाटक की गोम्बेयाटा, तमिलनाडु की बोम्मालाट्म,

राजस्थान की कठपुतली। भारत के अलग-अलग राज्यों स्थानों पर यह कठपुतलियाँ अपनी लोक कथाओं, संगीत व सांस्कृतिक रूप से अपना अलग महत्व रखती हैं।

संगीत अपने आरंभिक चरण से ही कठपुतली कला के साथ सलंग्नित है। संगीत केवल खेल को रेखांकित नहीं करता अपितु दर्शकों के समक्ष देवताओं, नायक तथा राक्षसों की जटिल कहानियों के माध्यम से मार्गदर्शन करता है यह पारम्परिक सांस्कृतिक गाथाऐं दर्शकों को अपनी संस्कृति स्मृति के रूप में याद रहती है, जिससे बालकों व युवाओं को प्राचीन ग्रन्थ, महाकाव्य का ज्ञान हो जाता है।

प्राचीन व मध्ययुगीन काल के समय कलाकार मेलों, यात्राओं के स्थान पर खेल के दौरान बांसुरी जैसे सरल वाद्य यंत्र बजाते थे जिसके प्रदर्शन से दर्शकों को आकर्षित करने व प्रदर्शन में जुड़ाव बनाए रखने में सहायता मिलती थी। जैसे-जैसे कठपुतली परिष्कृत रूपों में विकसित हुई पुर्नजागरण समय के कठपुतली थिएटर, संगीत ने अहम भूमिका निभाना क्रियान्वित रखा।(शर्मा, 2008) इसमें विस्तृत रचनाऐं शामिल थी जो कठपुतलियों की विभिन्न जटिल विधियों के साथ समन्वय स्थापित करती थी। कठपुतलियों में संगीत सांस्कृतिक संदर्भों में गहराई से समाहित है जो कि समाज की परम्पराओं संस्कृति और मूल्यों के सौंदर्य शास्त्र को दर्शाता है। उदाहरणतः जापान में बूनराकू पपेट थिएटर, इंडोनेशिया का वियांग कुलित तथा ब्रिटिश पंच एवं जूड़ी तथा भारतीय धागा कठपुतली अपनी जटिल कठपुतलियों व कुशल कठपुतली कलाकारों के लिए लोकप्रिय है।वेयांग कुलित इंडोनेशिया की छाया कठपुतली के माध्यम से कहानी कहने का एक प्राचीन रूप है जो अपने विस्तृत रूप और जटिल संगीत शैलियों के लिए जाना जाता है। यह अनुष्ठान, पाठ और मनोरंजन का एक अनूठा संयोजन प्रस्तुत करता है। यह जावा और बाली की संस्कृतियों में पाया जाता है।इस प्रकार की कठपुतली कला में परम्परागत Gamelanआर्केस्ट्रा होता था, जिसमें ड्रम्स, गोगँ तथा अन्य संगीत के वाद्य यंत्रों का उपयोग कठपुतली कथा के मुख्य क्षणों पर अधिक प्रभाव उत्पन्न करने हेतु किया जाता था, अथवा एक रहस्मय वातावरण बनाने व किसी किरदार के आगमन को महत्व देने के लिये संगीत की विभिन्न ध्वनियाँ उपयोग में ली जाती थी। उदाहरण के लिये वेयांग कुलित में कहानी में आने वाले क्रियात्मक उतार चढ़ाव में जैसे युद्ध के द्रश्य हों अथवा भावात्मक क्षण हों उनमें संगीत की ध्वनि की आवृत्ति एवं तेजी को बढ़ाया अथवा घटाया जाता है।

चित्र संख्या-1 वेयांग कुलित इंडोनेशिया की छाया

Source https://en-m-wikipediaorg.translate.goog/wiki/Wayang_kulit?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=sc#/media/File%3ACOLLECTIE_TROPENMUSEUM_Wajang_kulit_voorstelling_begeleid_door_een_gamelanorkest_TMnr_10017906.jpg

बूनराकु जापान की कठपुतलीयह जापान का परम्परागत कठपुतली रंगमंच है जो 17वीं शती में जापान के ओसाका नगर में आरम्भ हुआ, जिसमें तीन प्रकार के प्रदर्शन समाहितहोते थे, कठपुतलीकार, गायक एवं संगीतकार इन तीनों के समन्वय से यह कठपुतली प्रदर्शन पूर्ण होता था। इसमें बजने वाला एक प्रमुख वाद्य यंत्र होता था जो Shamisenकहलाता था तथा कुछ कठपुतली खेलों में केवल यह ही वाद्य यंत्र बजता था। इस कठपुतली में एक तीन तार के बाद यन्त्र के द्वारा संगीत जोड़ा जाता था एक कथा वाचक कहानी और किरदारों के संवादों को बोलता है। इस प्रकार के कठपुतली प्रदर्शन में संगीत के माध्यम से कहानी के नाटकीय प्रदर्शन को अधिक गहनता और तीव्रता प्राप्त होती है। उदाहरण के लिए करुणा भरे दृश्यों में वाद्य यन्त्रों के माध्यम से धीमी तानों वाले संगीत के उच्चारण से दृश्य की गंभीरता और कठपुतलियों की भावनाओं को भली प्रकार से प्रदर्शित किया जाता है

चित्र संख्या-2 बूनराकु जापान कीकठपुतली

Source https://en.m.wikipedia.org/wiki/Bunraku

पंच एवं जुड़ीयह एक पारम्परिक कठपुतली प्रदर्शन है जिसमें मिस्टर पंच एवं उनकी पत्नी जूड़ी होती है, जिसमें उनके बीच के वार्तालाप को दर्शाया जाता है। 16वीं शती के लिखित अभिलेखों में इसका प्रमाण प्राप्त होता है। यह परम्परागत प्रदर्शन सड़कों पर प्रदर्शित करने वाली एक कला के रूप में विकसित हुआ, जिसमें कठपुतलीकार अनेक परम्परागत कथा कहानियों को व पंच और जूड़ी की कहानियों को दो कठपुतलियों के माध्यम से प्रस्तुत करता है इसमें एक प्रकार का जीवन्त संगीत पृष्ठभूमि में चलता रहता है, जो आने जाने वाले राहगीरों को अपनी ओर आकर्षित करता है तथा उन्हें खेल में बांधे रखता है। इसमें ड्रम, गिटार, पैन पाइप आदि बाद्य यन्त्र अधिक लोकप्रिय थे। इस प्रदर्शन में बजने वाले गाने व संगीत बहुत अधिक लोकप्रिय हुए तथा उनके नाम के एक आर्केस्ट्रा बैंड भी तैयार हुआ।देश विदेशों में अपने-अपने देश की संस्कृतियों मुख्यतः अनुष्ठानकि संस्कृतियों में कठपुतली तथा संगीत व औपचारिक संदर्भों में अविभाज्य रूप से समाहित है। ढ़ोल बजाना, बांसुरी बजाना, डमरू बजाना व मंत्रोच्चार तथा गायन प्रदर्शन के अभिन्न अंग है। जिसका प्रयोग मुख्यतः आत्माओं का आवाहन करने, पेत्रिक कहानियाँ सुनाने व सांप्रदायिक मूल्यों का जश्न मनाने के लिए किया जाता है। संगीत की लय तथा गति कठपुतलियों की गतिविधियों को निर्देशित करती है, जिससे दृश्य व श्रवण कहानी कहने का एक सामंजस्यपूर्ण मिश्रण बनता है जो दर्शकों के साथ गहराई से जुड़ता है। कठपुतली में संगीत व रचनात्मक एकीकरण केवल एक संगत नहीं अपितु मुख्य रूप से प्रदर्शन की संरचना व अर्थ का केंद्र होता है। भारतीय धागा कठपुतली प्रदर्शन की प्रमुख कला है जो राजस्थान से सम्बन्धित है, जिसके सन्दर्भ प्राचीन राजस्थानी लोक साहित्य एवं लोक गीतों में प्राप्त होते हैं, जहाँ भट्ट समुदाय इस कला को प्रदर्शित करता था।

चित्र संख्या 3 पंच एवं जुड़ी

Source https://en-m-wikipedia-org.translate.goog/wiki/Punch_and_Judy?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=sc#/media/File%3A'Punch_and_Judy'_Show%2C_Weymouth_Beach._-_geograph.org.uk_-_1146108.jpg

इस प्रकार की कठपुतली कला में लोक संगीत एक अभिन्न अंग के रूप में समाहित है, जिसमें कठपुतली प्रदर्शन के समय संगीतज्ञ साथ बैठकर विभिन्न वाद्य यंत्रों की सहायता से गीत के रूप में अथवा गेय पद्य के रूप में कहानी का वाचन करते हैं। इसमें भी संगीत की लय कठपुतली की गति के साथ समन्वय स्थापित करती है। जैसे कि राजस्थानी कठपुतली प्रदर्शन में अधिकतर ड्रम एवं अन्य वाद्य यन्त्रों जैसे बाँसुरी इत्यादि से एक जीवन्त वातावरण उपस्थित किया जाता है जो दर्शकों पर अधिक प्रभावी होता है। संगीत स्वर से गति को प्रभावित करता है तथा कथा के भावनात्मक प्रभाव को बढ़ाता है इन प्रदर्शनों में संगीत एक ऐसा वातावरण निर्मित करने में सहायता करता है जो दर्शकों की भावनात्मक यात्रा का मार्गदर्शन करते हुए तनाव, खुशी, दुख अथवा रहस्य की संभावना उत्पन्न करता है।

चित्रसंख्या 4 भारतीय धागा कठपुतली

Source
https://media.assettype.com/outlookindia/import/uploadimage/library/16_9/16_9_5/IMAGE_1652186288.webp?w=640&auto=format%2Ccompress&fit=max&format=webp&dpr=1.0

6. निष्कर्ष

कठपुतलियों का कार्यक्रम रंगमंच पर मनोरंजन के लिए प्रदर्शित किया जाता है, किंतु इससे दर्शक को मनोरंजन के साथ-साथ कुछ सीखने को व ग्रहण करने को मिलता है। क्योंकि आयोजित कार्यक्रम में लोक कथायें, नाटक, कहानी, साहित्य आदि का मंचन किया जाता है। कठपुतलियों के निर्जीव होने के उपरांत भी इसका मंचन ऐसा प्रतीत होता है, कि कोई कलाकार अपनी प्रस्तुति दे रहा है। यह तभी संभव हो पाता है जब संगीत का समन्वय कठपुतली कला में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करे। कठपुतली कला में संगीत एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में कार्य करता है। जो कहानी, नाटक, लोक कथा आदि को बढ़ावा देता है तथा सांस्कृतिक पहचान को प्रदर्शित करता है। संगीत की पारम्परिक लोक धुनों आर्केस्टा रचनाओं अथवा आधुनिक ध्वनि परिदृश्यों के माध्यम से संगीत भावनात्मक तथा लयबध्द आधार कठपुतली के जीवन में प्रदान करता है। कठपुतली कला नैतिक मूल्यों का विकास सामाजिक व आर्थिक प्रगति करता है।जैसे-जैसे कठपुतली का विकास क्रम जारी है वैसे-वैसे संगीत तथा इस कालजयी कला के बीच का सम्बन्ध निंसंदेह स्थायी व सांस्क्रतिक महत्व की आधारशिला बना रहेगा।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

भानावत, महेन्द्र, शिक्षाप्रद कठपुतली नाटिकायें (दस्ताना, छड़ तथा धागा शैली की कठपुतली नाटिकाऐं), सुभद्रा पब्लिकेशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स2002

Samar, Devilal, Folk Intertainments Of Rajasthan, Udaipur, BharteeyLok Kala Mandal,1979

सामर, देवीलाल, कठपुतली कला और शिक्षा, उदयपुर, भारतीय लोक कला मंडल, मुद्रक उपवन प्रिन्टर्स,197

Ghosh,Sampa and Banerjee, Utpal k, IndianPuppets, New Delhi,Abhinav publications, 2006

शर्मा, हरद्वारी लाल, कला के संगीत, साहित्य और उदात्त के तत्व, प्रकाशक- मानसी प्रकाशन, 2008

https://en-m-wikipedia-org.translate.goog/wiki/Wayang_kulit?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=sc#/media/File%3ACOLLECTIE_TROPENMUSEUM_Wajang_kulit_voorstelling_begeleid_door_een_gamelanorkest_TMnr_10017906.jpg

https://en.m.wikipedia.org/wiki/Bunraku

https://en.m.wikipedia.org/wiki/Wayang_kulit#/media/File%3ACOLLECTIE_TROPENMUSEUM_Wajangfiguur_van_perkament_voorstellende_Gatot_Kaca_TMnr_8-273.jpg

https://en-m-wikipedia-org.translate.goog/wiki/Punch_and_Judy?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=sc#/media/File%3A'Punch_and_Judy'_Show%2C_Weymouth_Beach._-_geograph.org.uk_-_1146108.jpg

https://media.assettype.com/outlookindia/import/uploadimage/library/16_9/16_9_5/IMAGE_1652186288.webp?w=640&auto=format%2Ccompress&fit=max&format=webp&dpr=1.0